आरती श्री गिरिधारी जी की

आरती गोपिका रमन गिरिधरन की,
निरखि ब्रज जुवति आनन्द भीनी ।

मनि खचित थार घनसार बाती बर,
ललित ललितादी सखि हाथ तीनी ।

बिहरत श्रीकुन्ज सुख पुंज पिय संग मिलि,
विविध भोजन किए रुचि नवीनी ।

प्रगट परमानन्द नवल बिट्ठलनाथ,
दास गोपाल लघु कृपा कीनी ।

विवरण

ब्रज की युवतियाँ गिरिधारी जी को देखकर आनन्द से सराबोर होकर गोपियों के प्यारे गिरिधर जी की आरती कर रहीं हैं । ये ब्रज की गलियों में विहार करने वाले गिरिधारी अपने प्रेमियों से मिलकर अति आनन्दित होते हैं ।

अनेक प्रकार के भोजन की इनकी रुचि है, दास गोपाल कह रहें है कि हे
बिट्ठलनाथ ! हम पर छोटी सी कृपा करके आप प्रगट होकर हमें परम आनन्द का अनुभव करा दीजिए ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.